श्रीमद् भागवत का यह सार
भगवद् भक्ति ही आधार

श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

नारायण कवच(भागवत मुखस्थ परीक्षा हेतु)

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

षष्ठः(स्) स्कंधः

॥ अथाष्टमोऽध्यायः ॥

ॐ हरिर्विदध्यान्मम सर्वरक्षां(न्),
न्यस्ताङ्घ्रिपद्मः(फ्) पतगेन्द्रपृष्ठे।
दरारिचर्मासिगदेषुचाप-
पाशान् दधानोऽष्टगुणोऽष्टबाहुः॥ 1 ॥

ॐ – हे ईश्वर; **हरिः**– भगवान्; **विदध्यात्** — हमें प्रदान करें; **मम** - मेरा; **सर्व- रक्षाम्** - सभी ओर से सुरक्षा; **न्यस्त** — रखा हुआ; **अङ्घ्रि-पद्मः** – जिनके चरणकमल; **पतगेन्द्र-पृष्ठे** – समस्त पक्षियों के राजा गरुड़ की पीठ पर; **दर** – शंख; **अरि-चर्म**—ढाल; **असि**—तलवार; **गदा**– गदा ; **इषु** – तीर; **चाप**– धनुष; **पाशान्**- पाश, फंदा; **दधानः**- ग्रहण किये हुए; **अष्ट** — आठ; **गुणः**- सिद्धियों से युक्त; **अष्ट** – आठ; **बाहुः**- भुजाएँ ।

जलेषु मां(म्) रक्षतु मत्स्यमूर्तिर्-
यादोगणेभ्यो वरुणस्य पाशात्।
स्थलेषु मायावटुवामनोऽव्यात्,
त्रिविक्रमः(ख्) खेऽवतु विश्वरूपः ॥ 2 ॥

जलेषु– जल में; **माम्**– मुझको; **रक्षतु** - बचाएं; **मत्स्य-मूर्तिः**- मत्स्य रूप में परमेश्वर; **यादः-गणेभ्यः** – हिंस्त्र जलजन्तुओं से; **वरुणस्य** – वरुण नामक देवता के; **पाशात्** — बंदी बनाने वाले फंदे से; **स्थलेषु**- स्थल पर ; **माया - वटु** - वामन के रूप में ईश्वर का कृपामय रूप; **वामनः**- वामनदेव; **अव्यात्** — रक्षा करें; **त्रिविक्रमः** -त्रिविक्रम, जिनके तीन चरणों ने बलि के तीनों लोक नाप लिए; **खे**- आकाश में; **अवतु**- ईश्वर रक्षा करें; **विश्वरूपः**- विराट ब्रह्माण्ड रूप।

दुर्गेष्वटव्याजिमुखादिषु प्रभुः(फ्),

पायान्नृसिं(म्)होऽसुरयूथपारिः।

विमुञ्चतो यस्य महाट्टहासं(न्),

दिशो विनेदुर्न्यपतं(म्)श्च गर्भाः ॥ 3 ॥

दुर्गेषु — दुर्गम स्थानों में; अटवि- घने जंगल में; आजि-मुख-आदिषु – युद्धस्थल इत्यादि में; प्रभुः- परमेश्वर; पायात्—वे रक्षा करें; नृसिंहः– भगवान् नृसिंह देव; असुर-यूथप - असुरों के नायक, हिरण्यकशिपु का; अरिः– शत्रु; विमुञ्चतः–छोड़ा गया; यस्य–जिसका; महा-अट्ट-हासम् - महान् तथा भयानक अट्टहास; दिशः- समस्त दिशाएँ; विनेदुः-अनुगूँजित; न्यपतन्— गिर पड़े; च – तथा; गर्भाः-असुरों की पत्नियों के गर्भ ।

रक्षत्वसौ माध्वनि यज्ञकल्पः(स्),

स्वदं(म्)ष्ट्रयोन्नीतधरो वराहः।

रामोऽद्रिकूटेष्वथ विप्रवासे,

सलक्ष्मणोऽव्याद् भरताग्रजोऽस्मान् ॥ 4 ॥

रक्षतु — ईश्वर रक्षा करें; असौ – वह; मा– मुझको; अध्वनि- मार्ग में; यज्ञ-कल्पः- जिनकी पुष्टि यज्ञों के द्वारा की जाती है, यज्ञमूर्ति ; स्व- दंष्ट्रया - अपनी ही दाढ़ों से; उन्नीत — उठाया जाकर; धरः - पृथ्वी लोक ; वराहः – भगवान् वराह; रामः- भगवान् राम; अद्रि-कूटेषु- पर्वतों की चोटियों पर; अथ- तब; विप्रवासे- विदेशों में; स-लक्ष्मणः-अपने भाई लक्ष्मण सहित; अव्यात्–रक्षा करें; भरत-अग्रजः- महाराज भरत के ज्येष्ठ भ्राता; अस्मान्- हमारी ।

मामुग्रधर्मादखिलात् प्रमादान्-

नारायणः(फ्) पातु नरश्च हासात्।

दत्तस्त्वयोगादथ योगनाथः(फ्),

पायाद् गुणेशः(ख्) कपिलः(ख्) कर्मबन्धात् ॥ 5 ॥

माम्– मुझको; उग्र-धर्मात् - अनावश्यक धार्मिक नियमों से; अखिलात् - सभी प्रकार के कार्यों से; प्रमादात् - पागलपन में किये गये; नारायणः- भगवान् नारायण; पातु — रक्षा करें; नरः च- तथा नर; हासात् — वृथा गर्व से; दत्तः- दत्तात्रेय; तु — निस्सन्देह; अयोगात्- मिथ्या योग के मार्ग से; अथ– निस्सन्देह; योग-नाथः – समस्त योगशक्तियों के स्वामी,योगेश्वर; पायात्— रक्षा करें; गुण-ईशः-समस्त आध्यात्मिक गुणों के स्वामी; कपिलः– श्रीकपिल; कर्म-बन्धात् — कर्मों के बन्धन से।

सनत्कुमारोऽवतु कामदेवाद्-

धयशीर्षा मां(म्) पथि देवहेलनात्।

देवर्षिवर्यः(फ्) पुरुषार्चनान्तरात् ,

कूर्मो हरिर्मां(न्) निरयादशेषात् ॥ 6 ॥

सनत्-कुमारः–परम ब्रह्मचारी सनत्कुमार; अवतु— रक्षा करें; काम-देवात् — कामदेव के चंगुल से अर्थात् कामवासनाओं से; हय-शीर्षा– हयग्रीव ईश्वर का अवतार जिसका मुख घोड़े के समान था; माम्– मुझको; पथि– मार्ग में; देव-हेलनात्— ब्राह्मणों, वैष्णवों तथा परमेश्वर को नमस्कार न करने से; देवर्षि-वर्यः- देवर्षियों में श्रेष्ठ,नारद, पुरुष-अर्चन-अन्तरात्— विग्रह के पूजन में हुए अपराधों से; कूर्मः- भगवान् कूर्म (कच्छप); हरिः- भगवान् हरि; माम् – मुझको; निरयात्— नरक से; अशेषात्– असीम ।

धन्वन्तरिर्भगवान् पात्वपथ्याद्,

द्वन्द्वाद् भयादृषभो निर्जितात्मा।

यज्ञश्च लोकादवताज्जनान्ताद्,

बलो गणात् क्रोधवशादहीन्द्रः ॥ 7 ॥

धन्वन्तरिः– वैद्यराज धन्वन्तरि; भगवान्- श्रीभगवान्; पातु- मेरी रक्षा करें; अपथ्यात्- स्वास्थ्य के लिए हानिकर वस्तुओं,यथा मांस तथा मादक द्रव्यों से; द्वन्द्वात्—द्विधा से; भयात्—भय से; ऋषभः-श्री ऋषभदेव; निर्जित-आत्मा- मन तथा स्वयं को वश में रखने वाला; यज्ञः- यज्ञ; च- तथा; लोकात् — जनता के अपयश से; अवतात्— रक्षा करें; जन-अन्तात्— अन्य व्यक्तियों द्वारा उत्पन्न भयानक परिस्थितियों से; बलः- भगवान् बलराम; गणात्- गणों से; क्रोध-वशात्— क्रुद्ध सर्पों से; अहीन्द्रः- शेष नाग के रूप में भगवान् बलराम।

द्वैपायनो भगवानप्रबोधाद्,

बुद्धस्तु पाखण्डगणात् प्रमादात्।

कल्किः(ख्) कलेः(ख्) कालमलात् प्रपातु,

धर्मावनायोरुकृतावतारः ॥ 8 ॥

द्वैपायनः-वैदिक ज्ञान के दाता श्रील व्यासदेव; भगवान्— पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् का सर्वशक्तिमान अवतार; अप्रबोधात्— शास्त्र के अज्ञान से; बुद्धः तु- तथा भगवान् बुद्ध; पाषण्ड-गण - अबोध व्यक्तियों में मायाजाल फैलाने वाले नास्तिकों का; प्रमादात्- पागलपन से; कल्किः- केशव के अवतार भगवान् कल्कि;

कलेः- इस कलियुग के; काल-मलात्—इस युग के अंधकार से; प्रपातु- रक्षा करें; धर्म-अवनाय- धर्म की रक्षा हेतु; उरु – महान्; कृत- अवतारः – जो अवतरित हुए ।

मां(ङ्) केशवो गदया प्रातरव्याद्,
गोविन्द आसङ्गवमात्तवेणुः।
नारायण:(फ्) प्राह्ण उदात्तशक्तिर्-
मध्यन्दिने विष्णुररीन्द्रपाणिः ॥ 9 ॥

माम् – मुझको; केशवः- भगवान् केशव; गदया - अपनी गदा से; प्रातः- प्रातः काल; अव्यात् — रक्षा करें; गोविन्दः-भगवान् गोविन्द; आसङ्गवम्- दिन के चढ़े; आत्त-वेणुः-अपनी बाँसुरी लेकर; नारायणः- चतुर्भुज भगवान् नारायण; प्राह्णः- दोपहर के पूर्व; उदात्त-शक्तिः – विभिन्न प्रकार की शक्तियों को वश में रखने वाले; मध्यम्-दिने– दोपहर को; विष्णुः – भगवान् विष्णु; अरीन्द्र-पाणिः- शत्रुओं को मारने के लिए हाथ में चक्र धारण किये।

देवोऽपराह्णे मधुहोग्रधन्वा,
सायं(न्) त्रिधामावतु माधवो माम्।
दोषे हृषीकेश उतार्धरात्रे,
निशीथ एकोऽवतु पद्मनाभः ॥ 10॥

देवः-भगवान्; अपराह्णे- दिन के पंचम चरण में; मधु-हा- मधुसूदन; उग्र-धन्वा- शार्ङ्ग नाम के प्रचण्ड धनुष को धारण करने वाले; सायम्— दिन के छठे चरण में, संध्या समय; त्रि-धामा - ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश्वर त्रिमूर्ति;अवतु-रक्षा करें;माधवः–माधव;माम्– मुझको; दोषे- रात के प्रथम भाग में; हृषीकेशः– श्रीहृषीकेश; उत- भी; अर्ध- रात्रे– रात्रि के दूसरे भाग अथवा अर्ध रात्रि में; निशीथे- रात्रि के तीसरे चरण में; एकः– अकेले; अवतु— रक्षा करें; पद्मनाभ- पद्मनाभः

श्रीवत्सधामापररात्र ईशः(फ्),
प्रत्यूष ईशोऽसिधरो जनार्दनः।
दामोदरोऽव्यादनुसन्ध्यं(म्) प्रभाते,
विश्वेश्वरो भगवान् कालमूर्तिः ॥ 11 ॥

श्रीवत्स-धामा- श्रीवत्स चिह्न धारण करने वाले भगवान्;अपर-रात्रे - रात्रि के चतुर्थ भाग में; ईशः- परमेश्वर; प्रत्यूषे-रात्रि के अन्त में; ईशः– परमेश्वर; असि-धरः- हाथ में तलवार धारण करने वाले; जनार्दनः- भगवान्

जनार्दन; दामोदरः– भगवान् दामोदर; अव्यात्– वे रक्षा करें; अनुसन्ध्यम्- प्रत्येक संध्या को; प्रभाते- प्रातः काल(राति के छठे भाग); विश्व-ईश्वर– समस्त ब्रह्माण्ड के स्वामी; भगवान्— श्रीभगवान्; काल-मूर्तिः- साक्षात् काल ।

चक्रं(यँ) युगान्तानलतिग्मनेमि,
भ्रमत् समन्ताद् भगवत्प्रयुक्तम्।
दन्दग्धि दन्दग्ध्यरिसैन्यमाशु ,
कक्षं(यँ) यथा वातसखो हुताशः ॥ 12 ॥

चक्रम्—भगवान् का चक्र; युग-अन्त - युग के अन्त में; अनल- विध्वंसक अग्नि सदृश; तिग्म-नेमि- तीक्ष्ण किनारे;भ्रमत्— घूमते हुए; समन्तात्– चारों ओर ; भगवत्-प्रयुक्तम्-भगवान् द्वारा लगाया गया; दन्दग्धि दन्दग्ध-पूरी तरह जला दें; अरि-सैन्यम्— हमारे शत्रुओं की सेना; आशु- शीघ्रता से; कक्षम्- सूखी घास; यथा– सदृश; वात-सखः- वायु का मित्र; हुताशः- धधकती आग।

गदेऽशनिस्पर्शनविस्फुलिङ्गे,
निष्पिण्ढि निष्पिण्ढ्यजितप्रियासि।
कूष्माण्डवैनायकयक्षरक्षो-
भूतग्रहां(म्)श्चूर्णय चूर्णयारीन् ॥ 13 ॥

गदे— श्रीभगवान् के हाथों में स्थित हे गदा; अशनि- वज्र के समान; स्पर्शन- जिसका स्पर्श; विस्फुलिङ्गे - अग्नि की चिनगारियाँ छोड़ता हुआ; निष्पिण्ढि निष्पिण्ढि - कुचल दीजिये, कुचल दीजिये; अजित-प्रिया- श्रीभगवान् को अत्यन्त प्रिय; असि—हो; कुष्माण्ड- कुष्माण्ड नामक निशाचर; वैनायक– वैनायक नामक प्रेत; यक्ष-यक्ष नामक भूत प्रेत;रक्षः- राक्षस; भूत— भूत नामक प्रेत; ग्रहान्- तथा ग्रह नामक दुष्ट असुर; चूर्णय- चूर-चूर कर दो; चूर्णय- चूर-चूर कर दो; अरीन्- मेरे शत्रुओं को

त्वं(यँ) यातुधानप्रमथप्रेतमातृ-
पिशाचविप्रग्रहघोरदृष्टीन्।
दरेन्द्र विद्रावय कृष्णपूरितो,
भीमस्वनोऽरेर्हृदयानि कम्पयन् ॥ 14 ॥

त्वम्—तुम; यातुधान-राक्षस; प्रमथ-प्रमथगण; प्रेत– प्रेतगण; मातृ- माताएँ; पिशाच- पिशाच; विप्र-ग्रह — ब्रह्म राक्षस; घोर-दृष्टीन्– अत्यन्त भयानक नेत्रों वाले; दरेन्द्र- हे भगवान् के हाथों के शंख, पांचजन्य; विद्रावय-भगा दें; कृष्ण-पूरितः- कृष्ण द्वारा फूँके जाने पर; भीम-स्वनः- अत्यन्त डरावना शब्द करते हुए; अरेः- शत्रु के ; हृदयानि – हृदयों को; कम्पयन् — हिलाते हुए ।

त्वं(न्) तिग्मधारासिवरारिसैन्य-
मीशप्रयुक्तो मम छिन्धि छिन्धि।
चक्षूंषि चर्मञ्छतचन्द्र छादय,
द्विषामघोनां(म्) हर पापचक्षुषाम् ॥ 15 ॥

त्वम्- तुम; तिग्म-धार-असि-वर— हे तीक्ष्ण धारवाली श्रेष्ठ तलवार; अरि-सैन्यम् - शत्रु के सैनिकों को; ईश-प्रयुक्तः-श्रीभगवान् द्वारा काम में लाई जाने वाली; मम- मेरा; छिन्धि छिन्धि- खण्ड-खण्ड कर दो, खण्ड-खण्ड कर दो; चक्षूंषि– आँखें; चर्मन् — हे ढाल; शत-चन्द्र– एक सौ चन्द्रमाओं के समान तेजवान् मण्डल; छादय– ढक दो; द्विषाम्- मुझसे विद्वेष करने वालों को; अघोनाम्– पूर्ण पापी; हर— निकाल लो; पाप-चक्षुषाम्– पापपूर्ण आँखों वाले।

यन्नो भयं(ङ्) ग्रहेभ्योऽभूत्, केतुभ्यो नृभ्य एव च।
सरीसृपेभ्यो दं(म्)ष्ट्रिभ्यो, भूतेभ्यों(म्)ऽहोभ्य एव वा ॥ 16 ॥
सर्वाण्येतानि भगवन्- नामरूपास्त्रकीर्तनात्।
प्रयान्तु सं(ङ्)क्षयं(म्) सद्यो, ये नः(श्) श्रेयः(फ्) प्रतीपकाः ॥ 17 ॥

यत्—जो; नः–हमारे; भयम्— भय; ग्रहेभ्यः– ग्रह नामक असुर से; अभूत्– था; केतुभ्यः- गिरने वाले तारों से; नृभ्यः- विद्वेषी मनुष्यों से; एव च- भी; सरीसृपेभ्यः- साँपों या बिच्छुओं से; दंष्ट्रिभ्यः- बाघों, भेड़ियों तथा असुरों जैसे तीक्ष्ण दाँतों वाले पशुओं से; भूतेभ्यः- भूतों से अथवा भौतिक तत्त्वों(क्षिति,जल,अग्निआदि से); अंहोभ्यः- पापकर्मों से; एव वा– भी; सर्वाणि एतानि– ये सब; भगवत्-नाम-रूप-अनुकीर्तनात्— श्रीभगवान् के दिव्य रूप, नाम, लक्षण तथा वैशिष्ट्य के कीर्तन से; प्रयान्तु— प्राप्त होने दो; सङ्क्षयम्- पूर्ण विनाश को; सद्यः– तुरन्त; ये– जो ; नः-हमारा; श्रेयः-प्रतीपकाः– कल्याण में बाधक।

गरुडो भगवान् स्तोत्रस्- तोभश्छन्दोमयः(फ्) प्रभुः।
रक्षत्वशेषकृच्छ्रेभ्यो, विष्वक्सेनः(स्) स्वनामभिः ॥ 18 ॥

गरुडः-भगवान् विष्णु का वाहन, गरुड़; भगवान् — श्रीभगवान् के समान शक्तिशाली; स्तोत्र-स्तोभः- जिनकी स्तुति चुने हुए श्लोकों एवं गीतों से की जाती है; छन्दः-मयः- साक्षात् वेद; प्रभुः- भगवान्; रक्षतु — रक्षा करें; अशेष- कृच्छ्रेभ्यः-अनन्त दुखों से; विष्वक्सेनः– श्रीविष्वक्सेन; स्व-नामभिः- पवित्र नाम से।

सर्वापद्भ्यो हरेर्नाम- रूपयानायुधानि नः।

बुद्धीन्द्रियमनः(फ्) प्राणान्, पान्तु पार्षदभूषणाः ॥ 19 ॥

सर्व- आपद्भ्यः- सभी प्रकार की विपत्तियों से; हरेः– श्रीभगवान् का; नाम– पवित्र नाम; रूप- दिव्य रूप; यान- वाहन; आयुधानि—तथा सभी शस्त्रास्त्र; नः- हमारी; बुद्धि- बुद्धि; इन्द्रिय – इन्द्रिय; मनः- मन; प्राणान्- प्राण वायु; पान्तु — रक्षा तथा पालन करें; पार्षद-भूषणाः - आभूषण तुल्य पार्षद गण ।

यथा हि भगवानेव, वस्तुतः(स्) सदसच्च यत्।

सत्येनानेन नः(स्) सर्वे, यान्तु नाशमुपद्रवाः ॥ 20 ॥

यथा—जिस प्रकार; हि– निस्सन्देह; भगवान्— श्रीभगवान्; एव– निश्चय ही; वस्तुतः- अन्तिम रूप से;सत् - प्रकट; असत्—अप्रकट; च— तथा; यत्— जो भी; सत्येन- सत्य से; अनेन– यह; नः – हमारे; सर्वे– सभी; यान्तु – चले जाँय, दूर हों; नाशम् — संहार को; उपद्रवाः- उपद्रव ।

यथैकात्म्यानुभावानां(वँ), विकल्परहितः(स्) स्वयम्।

भूषणायुधलिङ्गाख्या, धत्ते शक्तीः(स्) स्वमायया ॥ 21 ॥

तेनैव सत्यमानेन, सर्वज्ञो भगवान् हरिः।

पातु सर्वैः(स्) स्वरूपैर्नः(स्), सदा सर्वत्र सर्वगः ॥ 22 ॥

यथा— जिस प्रकार; ऐकात्म्य- विभिन्न रूपों में प्रकट एकरूपता; अनुभावानाम् — विचारकों के; विकल्प - रहितः- भेद रहित; स्वयम्—स्वयं; भूषण-अलंकरण; आयुध- शस्त्रास्त्र; लिङ्ग-आख्याः – गुण तथा विभिन्न नाम;धत्ते—धारण करता है; शक्तीः– ऐश्वर्य, प्रभाव, शक्ति, ज्ञान, सौंदर्य तथा त्याग जैसी शक्तियाँ;स्व-मायया-अपनी आत्मशक्ति के प्रसार से; तेन एव — उसके द्वारा; सत्य-मानेन- वास्तविक ज्ञान;सर्व-ज्ञः- सर्वज्ञाता; भगवान्— श्रीभगवान्;हरिः— जीवात्माओं के मोह को हरने वाले; पातु— रक्षा करें; सर्वैः- सभी; स्व-रूपैः- अपने रूपों से; नः- हमको; सदा- सदैव; सर्वत्र- सभी जगहों पर; सर्व-गः- सर्वव्यापी ।

विदिक्षु दिक्षूर्ध्वमधः(स्) समन्ता-

दन्तर्बहिर्भगवान् नारसिं(म्)हः।

प्रहापयँल्लोकभयं(म्) स्वनेन*,

स्वतेजसा ग्र*स्तसम*स्ततेजाः ॥ 23 ॥

विदिक्षु—सभी कोनों में; दिक्षु- समस्त दिशाओं में (पूर्व,पश्चिम, उत्तर तथा दक्षिण) में; ऊर्ध्वम्- ऊपर; अधः -नीचे; समन्तात्—चारों ओर; अन्तः–भीतर; बहिः– बाहर; भगवान्— श्रीभगवान्; नारसिंहः– नृसिंह (आधे सिंह तथा आधे मनुष्य) देव के रूप में; प्रहापयन्— पूर्णतया विनष्ट करते हुए; लोक-भयम्- पशु,विष, आयुध,जल,वायु, अग्नि इत्यादि से उत्पन्न भय; स्वनेन– अपनी गर्जना से अथवा अपने भक्त प्रह्लाद महाराज के स्वर से; स्व-तेजसा- अपने निजी तेज से; ग्रस्त-आच्छादित; समस्त- अन्य सभी; तेजाः- प्रभाव ।

॥ इति ॥

भागवत मुखस्थ परीक्षा हेतु यह पीडीएफ विशेष रूप से परीक्षार्थियों के लिए ही संकलित की गई है, अतः मूल पुस्तक में दिए गए श्लोकांक इस पीडीएफ के श्लोकांकों से भिन्न हो सकते हैं।